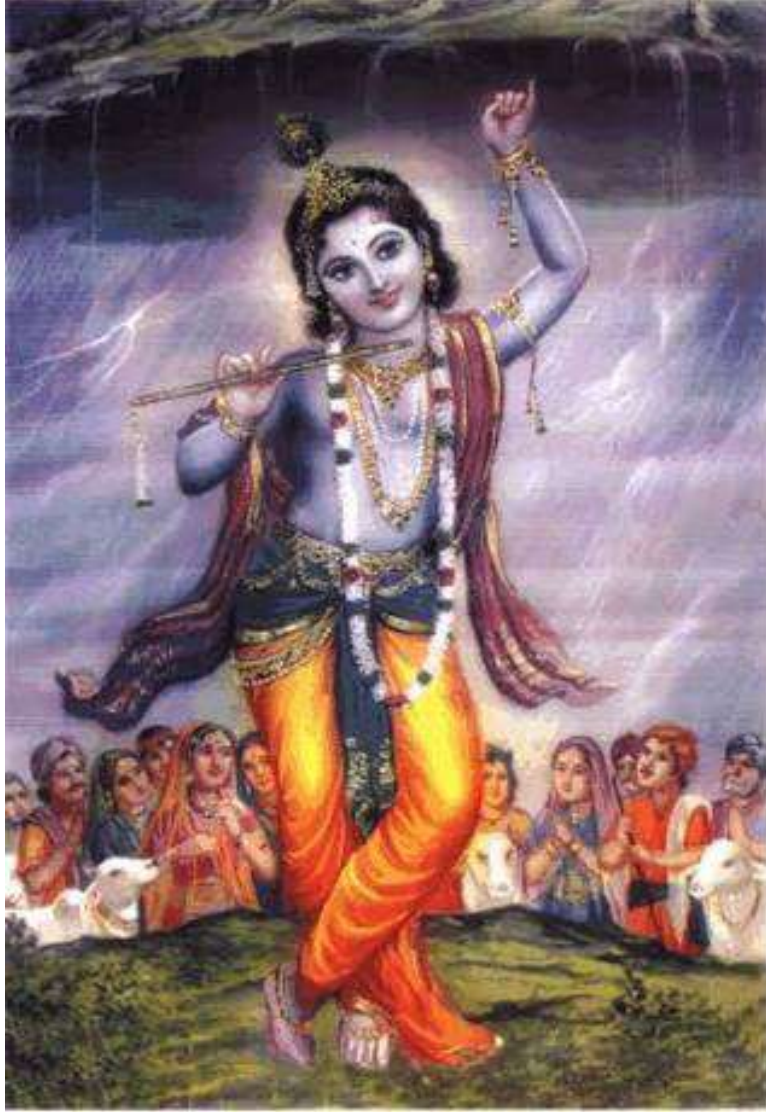


ॐ श्री कृष्ण शरणं मम ॐ

ॐ देवासुरसंपदविभागयोग नामक सोलहवाँ अध्याय ॐ



ठाकुर भिम सिंह द्वारा प्रस्तुत
श्रीमद्भगवद्गीता अमृत
श्लोकों के गूढ़ रहस्यों के साथ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

षोडशोऽध्यायः दैवासुरसंपद्विभागयोगः

- 01-05 फलसहित दैवी और आसुरी संपदा का कथन
06-20 आसुरी संपदा वालों के लक्षण और उनकी अधोगति का कथन
21-24 शास्त्रविपरीत आचरणों को त्यागने और शास्त्रानुकूल आचरणों के लिए प्रेरणा

ॐ ॐ

श्लोक १ -

अभयं स्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

दानं दमश्च यज्ञश्चस्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥

भय का सर्वथा अभाव, अन्तःकरण की अत्यन्त शुद्धि, ज्ञान के लिये योग में दृढ़ स्थिति और सात्विक दान, इन्द्रियों का दमन, यज्ञ, स्वाध्याय, कर्तव्य पालन के लिये कष्ट सहना (तप) और शरीर, मन तथा वाणी की सरलता (सीधापन) ।

अभयं - बहर से आनेवाला भय - चोर, डाकू व्याघ्र, सर्प आदि से भय ।
भीतर से पैदा होनेवाला भय - पाप, अन्याय, अत्याचार, चोरी करना, हिंसा करना, मृत्यु का - यह सब भीतर में भय पैदा करते हैं ।

Fearlessness, purity of mind and heart, steadfastness in yoga for knowledge, charity, self-control, sacrifice (Yagna), study of the scriptures (swadhyaye), austerity (tapa) and straight-forwardness (simple and down to earth).

External forces of fear – thieves, robbers, lions and snakes etc., because he identifies himself with the body.

Internal – Sins, evil, wrong-doing etc., injustice done to others, outrageous actions, (stealing, robbery, evading), hurting, death etc.

अन्तःकरण की शुद्धि - यह केवल सात्विक भोजन से हो पायगा क्योंकि भोजन ही रक्त और हाड़-मांस को बनाते हैं जिससे मन और बुद्धि पर गहरा असर पड़ता है ।

Purity of mind -is totally dependent on food that you eat and drink as it is what transforms your body ie., flesh, blood, bones etc., that has direct impact on your mind, thinking, analysis and interpretation.

अष्टाङ्गयोग मे से जहाँ तक हो सके, यम, नीयम, आसन और प्राणायाम, को कम-से-कम धारण करें । (५ यम हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचार्य और अपरिग्रह (अवशकता से अधिक संसारिक पदार्थों को न बटोरें) । ५ नीयम हैं - शौच, संतोष, तप, स्वध्याये और ईश्वर प्राणीधान (एक ईश्वर पर पूरी निष्ठा) ।

Yoga – 8 folds – One should aim to observe at least 4 of these ie., Yam, Niyam, Aasan & Pranayam.

दान - यह कर्तव्य कर्म के अन्दर आ जाता है । कर्तव्य कर्म का अर्थ है - भगवदर्थ कर्म या दूसरों के हित के लिये सब कुछ करना ।

Charity – this is covered under human's duty as everything a man does is meant to be done in a selfless manner.

यज्ञ - १२ प्रकार के यज्ञ-(गीता ४-२४-३०) ।

Yagya (Yajna) – Chapter 4 shlokas 24 to 30 cover 12 types of Yagya.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक २ - अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥**

अहिंसा, सत्यभाषण, क्रोध न करना, संसार की कामना का त्याग, अन्तःकरण में राग-द्वेष जनित हलचल का न होना, चुगली न करना, प्राणियों पर दया करना, संसारिक विषयों में न ललचाना, अन्तःकरण की कोमलता, अकर्तव्य कर्मों में लज्जा और चपलता (चंचलता) का अभाव ।

Non-violence, truth, freedom from anger, renunciation of the worldly possessions, tranquillity (calm & quite), aversion to fault-finding, compassion to living beings, freedom from covetousness (non-greed), gentleness, modesty, and steadiness (absence of fickleness).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ३ - तेजः क्षमा धृतिश्चौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥**

तेज (महापुरुषों का प्रभाव), क्षमा, धर्य, शरीर की शुद्धि, वैरभाव का न होना और मान-बढ़ाई को न चाहना, हे भरतवंशी अर्जुन! ये सभी दैवी सम्पदा को प्राप्त हुए मनुष्य के लक्षण हैं ।

Radiance, forgiveness, fortitude (patience, firmness), purity, freedom from malice (enmity) and vanity (non-expectation of respect from others), these O descendent of Bharat, are the marks of him, who is endowed with divine nature.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ४ - दम्भो दर्पो ऽभिमानश्च, क्रोधाः पारुष्य मेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य, पार्थ सम्पदामसुरी ॥**

हे पृथानन्दन! दम्भ करना (पाखण्ड), घमण्ड करना, और अभिमान करना, क्रोध करना तथा कठोरता रखना और अविवेक का होना, ये सभी आसुरी सम्पदा को प्राप्त हुए मनुष्य के लक्षण हैं ।

O Parth, the qualities of those who possess a demoniac nature are hypocrisy, arrogance, ego or pride, anger, harshness, and ignorance.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ५ - दैवी सम्पद्धिमोक्षाय, निबन्धाय असुरी मता ।
मा सुचः सम्पदं दैवीम,भिजातो ऽसि पाण्डव ॥**

दैवी सम्पत्ति मुक्ति के लिये और आसुरी सम्पत्ति बन्धन के लिये मानी गयी है । हे पाण्डव! तुम दैवी सम्पत्तिको प्राप्त हुए हो इसलिये तुम शोक, चिन्ता मत करो ।

The divine qualities lead to liberation, while the demoniac qualities are the cause for a continuing destiny of bondage. Grieve not, O Arjun, as you were born with saintly virtues.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ६ - द्वौ भूतसर्गो लोके, ऽस्मिं-दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशःप्रोक्त, आसुरं पार्थ मे शृणु ॥**

इस लोक में दो तरह के ही प्राणियों की सृष्टि है - दैवी और आसुरी । दैवी को मैं ने विस्तार से कह दिया, अब हे पार्थ! तुम मुझ से आसुरी को विस्तार से सुनिये ।

There are two kinds of beings in this world—those endowed with a divine nature and those possessing a demoniac nature. I have described the divine qualities in detail, O Arjun. Now hear from me about the demoniac nature.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ७ - प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च, जना न विदुर असुराः ।
न शौचं नापि चाचारो, न सत्यं तेषु विद्यते ॥**

आसुरी प्रकृति वाले मनुष्य किस में प्रवृत्त होना चाहिये और किस से निवृत्त होना

चाहिये - इस को नहीं जानते और उन में न तो बाह्य शुद्धि, न श्रेष्ठ आचरण तथा न सत्य पालन ही होता है ।

Those possessing a demoniac nature do not comprehend what actions are proper and what are improper. Hence, they possess neither purity, nor good conduct, nor even truthfulness.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ८ - असत्यम प्रतिष्ठं ते, जगदा दुरन ईश्वरम् ।
अपरस्पर सम्भूतं, किमन्य-अत्काम हैतुकम् ॥**

वे कहा करते हैं कि संसार असत्य, बिना मर्यादा के और बिना ईश्वर के अपने-आप केवल स्त्री-पुरुष के संयोग से पैदा हुआ है । इसलिये काम ही इस का कारण है, इस के सिवाये और क्या कारण है ? और कारण हो ही नहीं सकता है ।

They say, “The world is without absolute truth, without any basis (for moral order), and without a God (who has created or is controlling it). It is created from the combination of the two sexes and has no purpose other than sexual gratification.”

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक ९ - एतां दृष्टिम वष्टभ्य, नष्टात्मा नोऽल्पबुद्धयः ।
प्रभवन्त्युग्र कर्माणः, क्षयाय जगतो ऽहिताः ॥**

इस पूर्वोक्त नास्तिक दृष्टि का आश्रय लेनेवाले जो मनुष्य अपने नित्य स्वरूप को नहीं मानते, जिन की बुद्धि तुच्छ है, उग्र कर्म करनेवाले और संसार के शत्रु हैं, उन मनुष्यों की सामर्थ्य का उपयोग जगत् का नाश करने के लिये होता है ।

Holding fast to such views, these misdirected souls, with small intellect and cruel actions, arise as enemies of the world threatening its destruction.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक १० - कामम अश्रित्य दुष्पूरं, दम्भ मानम दान्विताः ।
मोहाद् गृहीत्वा सद्ग्राहा, अन्प्रवर्तन्ते ऽशुचिव्रता ॥**

कभी पूरी न होने वाली कामनाओं का आश्रय ले कर और मद में चूर रहनेवाले तथा अपवित्र व्रत धारण करनेवाले मनुष्य मोह के कारण दुराग्रहों को धारण करके संसार में विचरते रहते हैं ।

Harbouring insatiable lust (that cannot be fulfilled), full of hypocrisy, pride and arrogance, the demoniac cling to their false tenets (false beliefs) through delusion, they act with impure resolve.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक ११ - चिन्ताम परिमेयां च, प्रत्यान्त अमुपाश्रिताः ।
काम उपधोग परमा, यताव विति निश्चिताः ॥

वे मृत्यु पर्यन्त रहनेवाली आपार चिन्ताओं का आश्रय लेनेवाले, पदार्थों का संग्रह और उनका भोग में ही लगे रहनेवाले और 'जो कुछ है, वह इतना ही है' - ऐसा निश्चय करनेवाले होते हैं ।

They are obsessed with endless anxieties that end only with death. Still, they maintain with complete assurance that gratification of desires and accumulation of wealth is the highest purpose of life.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १२ - आशा पाश शतैर्बद्धाः, काम क्रोध परायणाः ।
ईहन्ते कामभोग अर्थ, मन्याये नार्थ सञ्चयान् ॥

वे आशा की सैकड़ों फाँसियों से बँधे हुए मनुष्य काम-क्रोध के परायण होकर पदार्थों का भोग करने के लिये अन्याय पूर्वक धन-संचय करने की चेष्टा करते रहते हैं ।

Held in bondage by hundreds of desires, and driven by lust and anger, they strive to accumulate wealth by unjust means, all for the gratification of their senses.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १३ - इदमद्य मया लब्ध मिमं, प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीद मपि मे, भविष्यति पुनर्धनम् ॥

वे इस प्रकार के मनोरथ किया करते हैं कि - इतनी वस्तुएँ तो हम ने आज प्राप्त कर ली और अब इस मनोरथ को पूरा कर लेंगे । इतना धन तो हमारे पास है ही, इतना धन फिर भी हो जायेगा ।

The demoniac persons think, "I have gained so much wealth today, and I shall now fulfill this desire of mine. This is mine, and tomorrow I shall have even more.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक १४ - असौ मया हतः, शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरो ऽहमहं भोगी, सिद्धो ऽहं बलवान्सुखी ॥**

वह शत्रु तो हमारे द्वारा मारा गया और उन दूसरे शत्रुओं को भी हम मार डालेंगे । हम ईश्वर (सर्वसमर्थ) हैं । हम भोग भोगनेवाले हैं । हम सिद्ध हैं । हम बड़े बलवान और सुखी हैं ।

The foe has been slain by Me and others also I shall slay. I am the Lord, I am the enjoyer, I am perfect, mighty, and happy. I possess supernatural powers.

ॐ ॐ

**श्लोक १५ - आढयो ऽभिजनवा नस्मि, को ऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य, इत्यज्ञान विमोहिताः ॥**

हम धनवान हैं, बहुत से मनुष्य हमारे पास हैं, हमारे समान दूसरा कौन है ? हम खूब यज्ञ करेंगे, दान देंगे और मौज करेंगे -इस तरह वे अज्ञान से मोहित रहते हैं ।

I am rich and I have a large family. Who else is equal to me? I shall perform sacrifice (Yagna). I shall give in charity. I shall rejoice. Saying thus, they are deluded by ignorance.

ॐ ॐ

**श्लोक १६ - अनेक चित्त विभ्रान्ता, मोह जाल समावृताः ।
प्रसक्ताः काम भोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥**

कामनाओं के कारण तरह-तरह से भ्रमित चित्त वाले, मोह-जाल में अच्छी तरह से फँसे हुए तथा पदार्थों और भोगों में अत्यन्त आसक्त रहनेवाले मनुष्य भयंकर नरकों में गिरते हैं ।

Possessed and led astray by such imaginings, enveloped in a mesh of delusion, and addicted to the gratification of sensuous pleasures, they descend to the murkiest (dark & unpleasant) hell.

ॐ ॐ

**श्लोक १७ - आत्मसम्भाविता स्तब्धा, धन मान मद अन्विता ।
यजन्ते नाम यज्ञैस्ते, दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥**

अपने को सब से अधिक पूज्य मानने वाले, अकड़ रखनेवाले तथा धन और मान के मद में चूर रहनेवाले वे मनुष्य दम्भ से अविधि पूर्वक नाममात्र के यज्ञों से यज्ञन करते हैं ।

Such self-conceited and stubborn people, full of pride and arrogant in their wealth, perform ostentatious sacrifices in name only, with no regard to the rules of the scriptures.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १८ - अहङ्कारं बलं दर्पं, कामं क्रोधं च संत्रिताः ।
मामात्म परदेहेषु, प्रद्विषन्तो ऽभ्यसूयकाः ॥

वे अहंकार, हठ, घमण्ड, कामना और क्रोध का आश्रय लेनेवाले मनुष्य, अपने और दूसरों के शरीर में रहनेवाले मुझे अन्तर्यामी के साथ द्वेष करते हैं तथा मेरे और दूसरों के गुणों में दोषदृष्टि रखते हैं ।

Blinded by egotism, strength, arrogance, desire, and anger, the demonic abuse my presence within their own body and in the bodies of others.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक १९ - तानहं द्विषतः कूरान्, संसारेषु नराधमान् ।
क्षिपाम्य जस्त्रम शुभान्, असुरीष्वेव योनिषु ॥

उन द्वेष करनेवाले, क्रूर स्वभाव वाले और संसार में महान नीच, अपवित्र मनुष्यों को मैं बार-बार असुरी योनियों में ही गिराता रहता हूँ ।

These cruel and hateful persons, the vile and vicious of humankind, I constantly hurl them into the wombs of those with similar demoniac natures in the cycle of rebirth in the material world.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्लोक २० - आसुरीं योनि मापन्ना, मूढा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय, ततो यान्त्य धमां गतिम् ॥

हे कुन्तीनन्दन! वे मूढ़ मनुष्य मुझे प्राप्त न करके ही जन्म-जन्मान्तर में आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं, फिर उन से भी अधिक अधम गति में अर्थात् भयंकर नरकों में चले जाते हैं ।

These ignorant souls take birth again and again in demoniac wombs. Failing to

reach me, O Arjun, they gradually sink to the most abominable (shocking) type of existence.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक २१ - त्रिविधं नरकस्येदं, द्वारं नाशनम आत्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्त, स्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥**

काम, क्रोध और लोभ - ये तीन प्रकार के नरक के दरवाजे जीवआत्मा का पतन करनेवाले हैं, इसलिये इन तीनों का त्याग कर देना चाहिये ।

There are three gates leading to the hell of self-destruction for the soul—These are: lust, anger, and greed. Therefore, all should abandon these three.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एतैर् विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस् त्रिभिर् नरः ।
आचरत्य् आत्मनः श्रेयस् ततो याति परां गतिम् ॥२२॥

हे अर्जुन, नरक के इन तीनों द्वारों से मुक्त व्यक्ति अपने कल्याण के लिये आचरण करता है, इससे वह परमगति अर्थात् मुझे प्राप्त करता है. (१६.२२)

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यः शास्त्रविधिम् उत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिम् अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥२३॥

जो मनुष्य शास्त्रविधि को छोड़कर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, उसे न पूर्णत्व की सिद्धि मिलती है, न परमधाम और न सुख ही. (१६.२३)

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

**श्लोक २४ - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते, कार्या कार्य व्यवस्थितौ ॥
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं, कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥**

अतः तेरे लिये कर्तव्य-अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं । ऐसा जान कर तू इस लोक में शास्त्र विधि से नीयत कर्तव्य कर्म करने योग्य है । अर्थात् तुझे शास्त्र विधि के अनुसार कर्तव्य कर्म करने चाहिये ।

Therefore, let the scriptures be your authority in determining what should be done and what should not be done. Understand the scriptural injunctions and teachings, and then perform your actions in this world accordingly.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

गीता दर्पण के सोलहवे अध्याय का तात्पर्य

दुर्गुण-दुराचारों से ही मनुष्य चौरासी लाख योनियों एवं नरकों में जाता है। अतः मनुष्य को सद्गुण-सदाचारों को धारण कर के संसार के बन्धन से, जनम-मरण के चक्र से रहित हो जाना चाहिये।

जो दम्भ, दर्प, अभिमान, काम, क्रोध, लोभ आदि आसुरी-सम्पत्ति के गुणों का त्याग कर के अभय, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, दया, यज्ञ, दान, तप आदि दैवी सम्पत्ति के गुणों को धारण करते हैं, वे संसार के बन्धन से रहित हो जाते हैं। परन्तु जो केवल दुर्गुण-दुराचारों का काम, क्रोध, लोभ, चिन्ता, अहंकार आदि का आशय रखते हैं, उन में ही रचे-पचे रहते हैं, ऐसे वे आसुरी सम्पदा वाले मनुष्य चौरासी लाख योनियों एवं नरकों में जाते हैं।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

Gita Essence in English – Chapter 16

Due to bad qualities and misdeeds, man goes to 8.4 million births and hell. Therefore, by adopting virtuous conduct, man should become free from the bondage of the world and the cycle of birth and death.

Those who renounce the virtue of stupidity, pride, arrogance, anger, and love of the demoniac nature and adopt the virtues of Abhay (fearlessness), Ahinsa (non-violence), Satya (truth), Anger, Daya (love, mercy, sympathy, compassion), Sacrifice, Donation, and Austerity etc., they are freed from the bondage of the world.

But those with demonic behaviour possessing anger, lust, ego, greed, unnecessary tension, etc, remain trapped in them and eventually are driven to hell.



ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवतगीतासूपरिष्वु ब्रह्मविद्यां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे देवासुरसम्पदविभागयोगो नाम षोडसोऽध्याय ॥२॥